नईदुनिया

संपादकीय

डिजिटल चेहरे के पीछे छिपा अपराध एआई के जाल में दम तोड़ता बचपन

फोटो *तुम्हारी, गुनाह किसी और का और सजा बच्चे को। कल्पना कीजिए, एक बच्चा स्कूल गया, उसकी हंसती हुई फोटो क्लास ग्रुप में डाली गई और शाम तक उसी फोटो को एआई ने अश्लील तस्वीर में बदल दिया। बिना छुए, बिना मिले, बिना घर आए एक अपराध हो गया। यही नया अपराध है, जिसका नाम है डीपफेक बाल यौन शोषण। अब शिकार केवल महिलाएं ही नहीं, मासूम बच्चे भी हो रहे हैं। अपराधी डीपफेक और न्यूडिफाई एप के जरिए बच्चों की सामान्य तस्वीरों को अश्लील तस्वीरों में बदलकर उनका इस्तेमाल ब्लैकमेल और यौन उत्पीड़न के लिए कर रहे हैं। डिजिटल दुनिया में एक क्लिक किसी बच्चे की जिंदगी में ऐसा अंधेरा भर सकता है, जिससे निकलना उसके लिए सालों तक मुश्किल हो सकता है।*

आंकड़े डराते हैं। एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के चाइल्डलाइट ग्लोबल चाइल्ड सेफ्टी इंस्टीट्यूट के अध्ययन के अनुसार, एआई से जुड़ी बाल यौन शोषण सामग्री की रिपोर्ट में दो वर्षों में 8400 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। इंटरनेट वॉच फाउंडेशन ने बताया है कि 2026 की पहली छमाही में ऐसी 6310 तस्वीरों की जांच हुई, जो पूरे 2025 के 4512 मामलों से करीब 40 प्रतिशत अधिक है। अमेरिका के नेशनल सेंटर फॉर मिसिंग एंड एक्सप्लॉइटेड चिल्ड्रेन को दी जाने वाली एआई से संबंधित रिपोर्ट 2023 के लगभग 4700 से बढ़कर 2025 में चार लाख से अधिक हो गई। यूनिसेफ ने फरवरी 2026 में 11 देशों के अध्ययन के आधार पर बताया कि कम से कम 12 लाख बच्चों की तस्वीरों को बीते एक साल में यौन अपराध के लिए डीपफेक में बदला गया। दुनिया भर में हर साल 30 करोड़ से अधिक बच्चे किसी न किसी रूप में तकनीक आधारित यौन शोषण या उत्पीड़न का शिकार होते हैं। यह सिर्फ अपराध नहीं, बचपन पर हमला है। जिस बच्चे की नकली तस्वीर बनाई जाती है, वह असली जीवन में मर-मरकर जीता है। वह स्कूल जाने से डरता है, दोस्तों से बात करने से डरता है और कई बार खुद को ही गुनहगार समझने लगता है। भारत सरकार ने फरवरी 2026 में लागू आईटी नियमों के तहत डीपफेक और एआई निर्मित बाल यौन शोषण सामग्री हटाने के लिए सोशल मीडिया की जवाबदेही बढ़ाई है। शिकायत के बाद उसे हटाने की सीमा दो घंटे तय की गई है। यह फैसला कागज पर मजबूत लगता है, पर जमीन पर सवाल है कि एक बार तस्वीर टेलीग्राम, व्हाट्सएप या किसी डार्क वेबसाइट पर चली गई, तो दो घंटे में क्या होगा? वह हजारों मोबाइल तक पहुंच सकती है। इसलिए समयसीमा के साथ रोकथाम जरूरी है। सोशल मीडिया कंपनियों को ऐसे फिल्टर लगाने होंगे, जो ऐसी तस्वीरों को अपलोड होते ही पहचान लें और तुरंत ब्लॉक कर दें।

पहला काम माता-पिता का है। बच्चों की तस्वीरें सोशल मीडिया पर डालने से पहले सोचिए। आपका प्यार और उत्साह कहीं बच्चे की डिजिटल पहचान के लिए खतरा न बन जाए। दूसरा काम स्कूलों का है। बच्चों की तस्वीरें वेबसाइट और सोशल मीडिया पर साझा करते समय सुरक्षा और गोपनीयता का ध्यान रखा जाए। तीसरा काम हम सबका है। बच्चों से खुलकर बात कीजिए और उन्हें बताइए कि यदि कोई उनकी फोटो से गलत हरकत करे, तो इसमें उनकी कोई गलती नहीं है। वे शर्मिंदा न हों और तुरंत बताएं। तकनीक अपराध का हथियार बन रही है, लेकिन हमारी चुप्पी उसे ताकत देती है। बचपन को बचाना है, तो मोबाइल से ज्यादा संवाद पर ध्यान देना होगा।

आजकल

बर्बाद भविष्य का हिसाब कौन देगा, चौदह आरोपियों पर आरोप तय, लाखों सपनों पर ताला

नीट पेपर लीक मामले में अब जाकर 14 आरोपियों पर आरोप तय हुए हैं। दिल्ली की अदालत ने 206 पन्नों के आदेश में कहा कि आरोपियों के खिलाफ साजिश, धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार समेत कई अपराधों के पर्याप्त प्रथमदृष्टया सबूत हैं। आरोप है कि उन्होंने एनटीए की गोपनीय परीक्षा सामग्री अवैध तरीके से हासिल की। इनमें एनटीए के तीन विषय विशेषज्ञ भी शामिल हैं। अब 25 नवंबर से रोजाना सुनवाई होगी और तय होगा कि कथित साजिश में किसकी क्या भूमिका थी। सवाल है कि कार्रवाई में इतनी देर क्यों हुई?

देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा में धांधली के आरोपों की जांच और आरोप तय होने में इतना समय लगना लाखों छात्रों के भविष्य के साथ अन्याय है। सरकार की कार्रवाई का ढर्रा देखिए। पहले पेपर लीक होता है, फिर हंगामा, जांच और कुछ गिरफ्तारियां। असली जिम्मेदार अक्सर बच निकलते हैं। जांच की धीमी गति और लापरवाही अपराधियों को बचने का मौका देती है।

सोचिए उस छात्र के बारे में जिसने दो साल कोटा में रहकर पढ़ाई की, माता-पिता के लाखों रुपये खर्च हुए, नींद और भूख त्यागकर तैयारी की और परीक्षा के दिन पता चला कि पेपर पहले ही बिक चुका है। उसका क्या कसूर था? उसका भविष्य किसने बर्बाद किया? एनटीए जैसी संस्था के विषय विशेषज्ञ ही आरोपी बन जाएं तो भरोसा कहां बचेगा? यह सिर्फ पेपर लीक नहीं, भरोसे का लीक है। पेपर लीक एक संगठित कारोबार बन चुका है। जब तक इस गठजोड़ की जड़ों पर प्रहार नहीं होगा, लाखों छात्रों के सपने बिकते रहेंगे। अब जरूरत है कठोर कार्रवाई की। एनटीए का पुनर्गठन हो, पेपर लीक के दोषियों को कठोरतम सजा मिले, जांच समयसीमा में पूरी हो और प्रभावित छात्रों को न्याय मिले। अदालत का ट्रायल कहीं एक और तारीख बनकर न रह जाए। आखिर बर्बाद हुए भविष्य का हिसाब कौन देगा?

रेहड़ी से सम्मान तक, मध्य प्रदेश सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला राज्य

मध्य प्रदेश ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि छोटा व्यापारी ही अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी ताकत है। प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना के प्रभावी क्रियान्वयन में मध्य प्रदेश ने राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय उपलब्धि अर्जित की है। केंद्रीय आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय की ओर से शुक्रवार को नई दिल्ली स्थित डॉ. आंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र में आयोजित स्वनिधि सम्मान पुरस्कार 2026 समारोह में मध्य प्रदेश को दो राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। प्रदेश ने नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय दुबे तथा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राज्य और सर्वाधिक ऋण वितरण की श्रेणियों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

इंदौर प्रथम, सारणी और बालाघाट तृतीय स्थान पर रहे। इसी समारोह में डिजिटल भुगतान और महिला सशक्तिकरण में भी प्रगति दर्ज की गई। मध्य प्रदेश में पीएम स्वनिधि योजना के माध्यम से पथ विक्रेताओं को डिजिटल अर्थव्यवस्था से जोड़ने के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं। प्रदेश के सात लाख इकसठ हजार से अधिक पथ विक्रेताओं ने डिजिटल लेनदेन को अपनाया है। डिजिटल भुगतान को प्रोत्साहित करने के परिणामस्वरूप हितग्राहियों को 59 करोड़ 72 लाख रुपये से अधिक की कैशबैक प्रोत्साहन राशि प्राप्त हुई है। योजना के कुल हितग्राहियों में लगभग 40 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी है, जो महिला सशक्तिकरण की दिशा में बड़ी उपलब्धि है। पीएम स्वनिधि योजना के अंतर्गत मध्य प्रदेश में अब तक 10.87 लाख से अधिक पथ विक्रेताओं को लाभान्वित किया गया है।



प्रदेश में 17.22 लाख से अधिक ऋण प्रकरणों के माध्यम से लगभग 2,827.84 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई गई है। योजना ने शहरी क्षेत्रों में छोटे व्यवसायों से जुड़े पथ विक्रेताओं को औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। टाउन सिटी श्रेणी में सारणी और बालाघाट ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, जबकि निगम इंदौर ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान हासिल किया। इंदौर ने पथ विक्रेताओं को संस्थागत ऋण उपलब्ध कराने में प्रभावी क्रियान्वयन और समावेशन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है।

पुरस्कार का महत्व सिर्फ आंकड़ों में नहीं, बल्कि सोच में है। पहले पथ विक्रेता को बैंक ऋण नहीं देता था, उसे साहूकार के पास जाना पड़ता था और अधिक ब्याज देना पड़ता था। अब पीएम स्वनिधि ने उसे पहचान दी है। पहली बार 10 हजार, फिर 20 हजार और फिर 50 हजार रुपये तक का ऋण बिना गारंटी के मिल रहा है और समय पर लौटाने पर ब्याज में छूट भी मिल रही है। इससे इंदौर की सब्जी बेचने वाली महिला से लेकर सारणी के चाय वाले तक को अपना व्यवसाय बढ़ाने का मौका मिला है। बालाघाट के फल विक्रेता ने अब ठेला नहीं, दुकान का सपना देखना शुरू कर दिया है। इस योजना की सबसे बड़ी सफलता डिजिटल लेनदेन है। पहले जो विक्रेता नकद में ही काम करते थे, आज वे क्यूआर कोड से भुगतान ले रहे हैं। सात लाख इकसठ हजार विक्रेताओं का डिजिटल होना अपने आप में बड़ी क्रांति है। इससे न केवल उनका हिसाब साफ रहता है, बल्कि उन्हें कैशबैक भी मिलता है।

59 करोड़ 72 लाख रुपये का कैशबैक इस बात का प्रमाण है कि डिजिटल इंडिया की नींव रेहड़ी पर भी रखी जा सकती है। महिला हितग्राहियों की 40 प्रतिशत भागीदारी बताती है कि जब आर्थिक सहायता सीधे हाथ में आती है, तो महिलाएं सबसे आगे आती हैं। इंदौर ने पहले भी स्वच्छता में देश में नाम कमाया है, अब उसने पथ विक्रेताओं के पुनर्वास में भी पहला स्थान प्राप्त किया है। निगम ने सिटी श्रेणी में पहला स्थान प्राप्त कर यह साबित किया है कि यदि नीयत साफ हो, तो सबसे कठिन वर्ग को भी मुख्यधारा में लाया जा सकता है। टाउन सिटी श्रेणी में सारणी और बालाघाट ने तृतीय स्थान प्राप्त कर छोटे शहरों की बड़ी क्षमता दिखाई है।

यह पुरस्कार मंजिल नहीं, पड़ाव है। अभी भी लाखों पथ विक्रेता ऐसे हैं, जो कागजी कार्रवाई के कारण छूट जाते हैं। उन्हें जोड़ना जरूरी है। ऋण वितरण के साथ-साथ प्रशिक्षण भी जरूरी है, ताकि वे समझ सकें कि पैसे का उपयोग कैसे करें। डिजिटल लेनदेन को और बढ़ावा देना होगा और सबसे जरूरी है कि पथ विक्रेताओं को अतिक्रमणकारी नहीं, बल्कि शहर की अर्थव्यवस्था का हिस्सा माना जाए। मध्य प्रदेश ने जो मॉडल दिखाया है, वह पूरे देश के लिए उदाहरण है। जब रेहड़ी वाला आत्मनिर्भर होगा, तभी शहर आत्मनिर्भर होगा और तभी देश आत्मनिर्भर बनेगा।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

यूपी में मुस्लिम वोट का घमासान, सपा की कंजूसी और ओवैसी की सेंधमारी

सौ सीटों पर नजर, सौदे पर टिकट का खेल, चौसठ से चार तक सिमटता प्रतिनिधित्व क्यों बढ़ा रहा है बेचैनी, टिकट कटने की आहट से घबराए नेता ओवैसी की ओर क्यों देख रहे हैं

लखनऊ में बैठकर जो सियासी नक्शा खींचा जा रहा है, उसमें सबसे मोटा रंग मुस्लिम वोट का है। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस ने अपना-अपना जाल बुनना शुरू कर दिया है, पर इस बार मैदान में तीसरा खिलाड़ी भी पूरी तैयारी से उतर रहा है। सांसद असदुद्दीन ओवैसी की प्रदेश को लेकर जो नई रणनीति है, वह सपा के लिए सिरदर्द बन गई है। खबर यह है कि ओवैसी की नजर विशेष रूप से उन मुस्लिम नेताओं पर है, जिनका सपा से टिकट कटने वाला है और जो राजनीतिक गलियारों से आई खबरों पर काम कर रहे लोगों के बीच अपनी दावेदारी मजबूत करने की जुगत में हैं। सपा से टिकट कटने की स्थिति में नेताओं के लिए बनाया गया प्लान ओवैसी को बड़ा मौका दे रहा है और वे इस मौके को भुनाने में जुट गए हैं।



उत्तर प्रदेश में चार सौ तीन विधानसभा सीटें हैं, जिनमें से एक सौ बीस से एक सौ तैंतालीस सीटें ऐसी हैं, जहां मुस्लिम मतदाता हार-जीत तय करता है। अकेले पश्चिमी यूपी में तिहत्तर सीटों पर तीस प्रतिशत से अधिक मुस्लिम आबादी रहती है। यानी ये वो सीटें हैं, जहां मुस्लिम वोट के बिना कोई भी प्रत्याशी जीत की दहलीज तक नहीं पहुंच सकता। पिछले समीकरणों को देखते हुए एआईएमआईएम को उम्मीद है कि वह इस बार बड़ा खेल करेगी। ओवैसी ने लगभग सौ मुस्लिम बहुल सीटों पर मुस्लिम उम्मीदवार उतारने की तैयारी कर ली है और उनका दावा है कि वे उन सीटों पर सीधे मुकाबले में हैं, जहां सपा ने हमेशा मुस्लिम वोट लिया, पर टिकट देने में कंजूसी की। आंकड़े इस कंजूसी की गवाही खुद दे रहे हैं। पिछले चुनाव के आंकड़ों पर नजर डालें तो दो हजार बाईस में सपा ने चौसठ मुस्लिम प्रत्याशी उतारे थे, जो करीब पंद्रह दशमलव अट्ठासी प्रतिशत था। इसके बाद दो हजार चौबीस के लोकसभा चुनाव में यह संख्या घटकर केवल चार रह गई, जो कुल सीटों का पांच प्रतिशत ही है। यानी विधानसभा से लोकसभा तक आते-आते सपा ने मुस्लिम प्रतिनिधित्व को लगभग खत्म ही कर दिया है। समाजवादी पार्टी उनका साथ छोड़ रही है और टिकट कटने की स्थिति बन रही है। इसी दर्द को ओवैसी अपना हथियार बना रहे हैं। वे कह रहे हैं कि जब तक मुस्लिम समाज अपना खुद का नेतृत्व नहीं खड़ा करेगा, तब तक उसे टिकट के लिए दूसरों के दरवाजे पर खड़ा रहना पड़ेगा। एआईएमआईएम की जो नई रणनीति है, वह पहले से अलग है। पहले पार्टी अकेले दम पर बड़े चेहरे उतारती थी, पर इस बार वह बदलकर उतर रही है। पार्टी की नजर ऐसे नेताओं पर है, जो काफी लंबे समय से राजनीति में हाथ आजमा रहे हैं और जिनकी अपनी बिरादरी में पकड़ है, जो चुनाव में उतरना चाहते हैं, लेकिन सपा से उनकी उम्मीदें टूट रही हैं। ऐसे नेताओं को एआईएमआईएम अपने पाले में लाकर एक साथ दो फायदे लेना चाहती है। पहला फायदा यह कि उसे जमीनी नेता मिल जाएंगे और दूसरा फायदा यह कि सपा का मुस्लिम वोट बैंक टूटेगा। जो चुनाव में उतरना चाहते हैं, लेकिन सपा की रणनीति से परेशान हैं, वही लोग अब ओवैसी के संपर्क में हैं और राजनीतिक नाव को सहारा देने की तैयारी कर रहे हैं।

सपा की दुविधा भी समझने लायक है। पार्टी को लगता है कि यदि वह ज्यादा मुस्लिम उम्मीदवार उतारेगी तो उसे यादव और गैर-यादव पिछड़ा वोट का नुकसान होगा और भाजपा को ध्रुवीकरण का मौका मिल जाएगा। इसलिए वह फूंक-फूंककर कदम रख रही है, पर इस फूंक-फूंक के चक्कर में उसका अपना परंपरागत वोटर उससे दूर होता जा रहा है। मुस्लिम समाज में यह संदेश जा रहा है कि सपा सिर्फ वोट लेना जानती है, देना नहीं। यही वह खाली जगह है, जिसे भरने के लिए ओवैसी पूरी ताकत से लगे हैं। वे उन मुस्लिम नेताओं की राजनीतिक नाव को सहारा देने की तैयारी कर रहे हैं, जो अपनी ही पार्टी में हाशिए पर महसूस कर रहे हैं और विशेष रूप से उन मुस्लिम नेताओं पर नजर है, जिनकी दावेदारी मजबूत है। आने वाला चुनाव तय करेगा कि यह सेंधमारी कितनी कामयाब होती है। यदि ओवैसी सौ सीटों पर मजबूत उम्मीदवार खड़े करने में कामयाब हो गए तो वे भले ही सरकार न बना पाएं, पर सपा और कांग्रेस का खेल जरूर बिगाड़ सकते हैं। और यदि सपा ने समय रहते अपने मुस्लिम नेताओं को मनाया नहीं और उन्हें उचित प्रतिनिधित्व नहीं दिया, तो उसका अपना किला ही अंदर से कमजोर हो जाएगा। फिलहाल तो एक बात साफ है कि यूपी में मुस्लिम वोट अब सिर्फ एकतरफा नहीं रहा। उसके सामने विकल्प है और वह विकल्प ओवैसी के रूप में तेजी से उभर रहा है। टिकट की इस लड़ाई में कौन किसे पाले में लाता है, यह देखना सबसे दिलचस्प होगा।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

पंजाब की सत्ता का असली ताला तीन हजार डेरों के पास

पच्चीस फीसदी वोट पर कब्जा रखने वाले डेरे क्यों बने किंगमेकर, डेरा सच्चा सौदा से राधा स्वामी तक, हर आस्था का अपना सियासी वजन

पंजाब में चुनाव आते ही एक अजीब नजारा देखने को मिलता है। बड़े-बड़े नेता बड़े-बड़े वादे छोड़कर छोटे-छोटे डेरों के दरवाजे पर माथा टेकते नजर आते हैं। वजह साफ है। इस राज्य में तीन हजार से ज्यादा छोटे-बड़े डेरे हैं और इनमें से करीब तीन सौ डेरे ऐसे हैं, जिनका असर सीधे चुनावी नतीजों पर पड़ता है। बताया जाता है कि प्रदेश के लगभग पच्चीस फीसदी वोटर किसी न किसी डेरे से जुड़े हुए हैं। यानी हर चौथा वोटर डेरे की ओर देखता है कि गुरुगद्दी से क्या आदेश आता है। ऐसे में कोई भी पार्टी, चाहे वह बड़ी हो या छोटी, डेरों को नजरअंदाज करके सत्ता का सपना नहीं देख सकती। यही कारण है कि आज सभी पार्टियां डेरों के आगे नतमस्तक हैं।



पंजाब की इस डेरा राजनीति की जड़ें बहुत गहरी हैं। यहां डेरा सिर्फ पूजा-पाठ की जगह नहीं है, यह एक पूरी सामाजिक व्यवस्था है। सत्संग और डेरा ब्यास का खास प्रभाव है। लाखों लोग रोजाना वहां मत्था टेकते हैं। इसी तरह डेरा सच्चा सौदा का प्रभाव मालवा क्षेत्र में बहुत मजबूत है। दोआबा में डेरा सचखंड बल्लां और गुरु रविदास जी के अनुयायियों की संख्या लाखों में है। दलित, रविदासिया और सिख समुदाय का बड़ा हिस्सा इन्हीं डेरों से जुड़ा है। इन डेरों के प्रमुखों का एक इशारा ही काफी है कि वोट किस तरफ जाएगा। इसलिए नेता धार्मिक आयोजनों के बहाने डेरा प्रमुखों से मुलाकात कर रहे हैं। भले ही ऊपर से यह मुलाकात सामाजिक दिखे, पर अंदर से यह पूरी तरह सियासी सौदा है।

इस बार के विधानसभा चुनाव में डेरों की अहमियत और भी बढ़ गई है, क्योंकि मुकाबला बहुत करीबी माना जा रहा है। भाजपा गुरु रविदास जी के छह सौ पचासवें प्रकाश पर्व को बड़े स्तर पर मनाने की तैयारी में है। मुख्यमंत्री खुद इस आयोजन की निगरानी कर रहे हैं, वहीं राष्ट्रीय नेता जालंधर और आसपास के इलाकों में लगातार दौरे कर रहे हैं। कांग्रेस और आम आदमी पार्टी भी पीछे नहीं हैं। दोनों ही दल अलग-अलग डेरों में हाजिरी लगा रहे हैं, क्योंकि उन्हें पता है कि जो डेरा साधेगा, वही पंजाब साधेगा। यही वजह है कि अलग-अलग पार्टियों के बड़े नेता डेरा-डेरा घूम रहे हैं और प्रमुखों से मुलाकात कर रहे हैं। यह मुलाकातें बंद कमरों में हो रही हैं और बाहर आकर इसे सामाजिक कार्य बताया जा रहा है, पर सच्चाई सबको पता है। डेरों की ताकत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब तक डेरे अपना समर्थन नहीं देते, तब तक वोटर भी अपना मन नहीं बनाते। कई बार तो ऐसा होता है कि डेरा प्रमुख आखिरी रात तक अपना फैसला नहीं बताते और पूरी बिरादरी इंतजार करती रहती है कि गुरुगद्दी से क्या हुक्म आएगा। जैसे ही हुक्म आता है, लाखों वोट एक साथ एक तरफ चले जाते हैं। यही वह ताकत है, जो किसी भी राजनीतिक दल के पास नहीं है। किसी भी पार्टी के पास इतना संगठित और अनुशासित वोट बैंक नहीं है, जितना डेरों के पास है। इसलिए पार्टियां चाहे कितने भी वादे कर लें, अंत में उन्हें डेरों के दरवाजे पर जाना ही पड़ता है।

अब सवाल यह उठता है कि क्या यह गठजोड़ सही है? क्या धर्म और राजनीति का यह मेल समाज के लिए अच्छा है? कुछ लोग कहते हैं कि डेरे समाज में सेवा का काम करते हैं। वे गरीबों की मदद करते हैं, नशामुक्ति अभियान चलाते हैं और लोगों को जोड़ने का काम करते हैं। यदि ऐसे संगठन राजनीति में आएंगे तो समाज में स्थिरता आएगी। वहीं दूसरे लोग कहते हैं कि धर्म को राजनीति से दूर रहना चाहिए। डेरों को केवल धार्मिक और सामाजिक कार्यों तक ही सीमित रहना चाहिए। पर पंजाब की हकीकत यह है कि यहां धर्म और राजनीति को अलग करना नामुमकिन है। यहां गुरुद्वारा प्रबंधन से लेकर डेरा प्रबंधन तक सबका सियासी कनेक्शन है और यही कनेक्शन चुनावों में सबसे बड़ा फैक्टर बन जाता है।

आने वाले दिनों में यह लड़ाई और भी तेज होने वाली है, क्योंकि हर पार्टी को पता है कि सत्ता की चाबी इन्हीं तीन हजार डेरों के पास है। जो पार्टी इन डेरों को अपने पक्ष में करने में कामयाब हो जाएगी, वही विधानसभा तक पहुंचेगी। इसलिए अब देखना यह होगा कि किस डेरे का आशीर्वाद किस पार्टी को मिलता है और किसका खेल बिगड़ता है। इतना तय है कि पंजाब में बिना डेरों के कोई भी राजनीतिक समीकरण पूरा नहीं होता और इस बार भी डेरे ही तय करेंगे कि पंजाब की गद्दी पर कौन बैठेगा।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

84 महादेव दर्शन यात्रा

84 महादेव : श्री घंटेश्वर महादेव (57)

शिवगण घंटा की तपस्या से प्रकट हुई कृपा, श्राप से मुक्ति का बना मार्ग

महाकाल वन में कार्तिक चौक पर विराजित घंटेश्वर महादेव की कथा शिवभक्ति, पश्चाताप और कृपा से जुड़ी है

भारत की प्राचीन धार्मिक परंपरा में उज्जैन का महाकाल वन आध्यात्मिक महत्व रखता है। भगवान महाकाल की नगरी में स्थित चौरासी महादेव की यात्रा इसी क्षेत्र की शिव उपासना और लोकविश्वासों से जुड़ी परंपरा है। स्कंद पुराण के अवंति खंड में महाकाल वन और यहां प्रतिष्ठित शिवलिंगों की महिमा का उल्लेख धार्मिक परंपरा में मिलता है। चौरासी महादेव यात्रा में 57वें स्थान पर श्री घंटेश्वर महादेव का पूजन किया जाता है। कार्तिक चौक के तिराहे पर स्थित यह मंदिर अपने नाम और उससे जुड़ी कथा के कारण भक्तों के बीच पहचान रखता है। यहां शिवलिंग के साथ माता पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, हनुमान और भैरव की प्रतिमाएं भी पूजित हैं। उज्जैन की यह परंपरा आज भी श्रद्धालुओं को प्राचीन शिवकथा और स्थानीय आस्था से जोड़ती है।

शिवगण घंटा और ब्रह्मलोक जाने की इच्छा : स्थानीय धार्मिक कथा के अनुसार, भगवान शिव के प्रिय गणों में घंटा नामक गण था। वह शिव की सेवा में रहता था, लेकिन एक समय उसके मन में ब्रह्मलोक देखने की इच्छा जागी। ब्रह्मलोक के वैभव और वहां की दिव्यता के बारे में सुनकर वह बिना भगवान शिव की अनुमति लिए वहां जाने के लिए निकल पड़ा। शिवगण के लिए अपने आराध्य की आज्ञा और सेवा सर्वोपरि मानी जाती है। घंटा का यह निर्णय उसकी भक्ति में आई चूक के रूप में देखा गया। भगवान शिव को जब उसके इस आचरण का पता चला, तो उन्होंने उसे श्राप दिया। श्राप के प्रभाव से घंटा पृथ्वी पर आ गिरा और उसे अपने कर्म का परिणाम भोगना पड़ा।

श्राप के बाद पश्चाताप और शिव की खोज : पृथ्वी पर आने के बाद घंटा को अपने निर्णय का बोध हुआ। वह दुखी हुआ और अपने अपराध के प्रायश्चित के लिए उपाय खोजने लगा। कथा के अनुसार, इसी दौरान उसकी भेंट कुछ ऋषि-मुनियों से हुई। घंटा ने उन्हें अपनी व्यथा सुनाई और श्राप से मुक्ति पाने का मार्ग पूछा। ऋषियों ने उसे समझाया कि भगवान शिव करुणा के सागर हैं। उनकी आराधना से कठिन संकट भी दूर हो सकते हैं। उन्होंने घंटा को महाकाल वन में स्थित एक शिवलिंग की तपस्या करने का उपाय बताया और उस स्थान की महिमा समझाई। ऋषियों के मार्गदर्शन से घंटा ने मन में श्रद्धा और पश्चाताप का भाव लेकर शिव आराधना का संकल्प किया।

कार्तिक चौक में तपस्या और घंटेश्वर नाम की प्रतिष्ठा : ऋषियों द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए घंटा महाकाल वन पहुंचा। उसने कार्तिक चौक के क्षेत्र में स्थित शिवलिंग के सामने तपस्या आरंभ की। कथा में उसकी साधना को कठिन, निरंतर और पूर्ण समर्पण से युक्त बताया गया है। वह भगवान शिव का स्मरण करते हुए अपने अपराध के लिए क्षमा मांगता रहा। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उसे श्राप से मुक्त किया और उसके कष्ट समाप्त हुए। इसी मान्यता के अनुसार, घंटा गण की तपस्या से प्रसन्न होकर शिव यहां घंटेश्वर महादेव के नाम से प्रतिष्ठित हुए। यह कथा बताती है कि शिव की शरण में पश्चाताप करने वाले के लिए भी कृपा का मार्ग खुला रहता है।



शिवलिंग, मंदिर और चौरासी महादेव यात्रा : श्री घंटेश्वर महादेव का मंदिर कार्तिक चौक के तिराहे पर स्थित बताया जाता है। चौरासी महादेव यात्रा की सूची में यह 57वें क्रम पर आता है, जबकि श्री रेवन्तेश्वर महादेव 56वें स्थान पर हैं और इसके बाद श्री प्रयागेश्वर महादेव 58वें क्रम पर पूजित हैं। इस क्रम से कार्तिक चौक का क्षेत्र चौरासी महादेव यात्रा में महत्वपूर्ण पड़ाव बनता है। मंदिर में भगवान शिव के साथ पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, हनुमान और भैरव की प्रतिमाओं के दर्शन भी श्रद्धालु करते हैं। काले रंग के शिवलिंग का उल्लेख स्थानीय विवरणों में मिलता है। मंदिर का स्वरूप भले ही शहर के बड़े मंदिरों की तरह भव्य न हो, लेकिन उज्जैन की गलियों और धार्मिक परंपराओं में बसे ऐसे छोटे मंदिर ही महाकाल वन की व्यापक आध्यात्मिक पहचान को जीवित रखते हैं।

दर्शन-पूजन की मान्यता और कथा का संदेश : भक्तों की मान्यता है कि श्री घंटेश्वर महादेव के दर्शन और श्रद्धापूर्वक पूजन से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं तथा जीवन के कष्ट दूर होते हैं। इस विश्वास का आधार मंदिर से जुड़ी शिवगण घंटा की कथा है, जिसमें श्राप, पश्चाताप, तपस्या और अंततः शिवकृपा का प्रसंग आता है। धार्मिक कथाएं केवल चमत्कार या वरदान का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि मनुष्य के आचरण को दिशा देने वाले संदेश भी देती हैं। घंटा की कथा यह स्मरण कराती है कि इच्छा और जिज्ञासा स्वाभाविक हैं, लेकिन किसी भी निर्णय में मर्यादा, विवेक और अपने दायित्वों का ध्यान आवश्यक है। गलती हो जाने पर अहंकार के बजाय स्वीकार, पश्चाताप और सुधार का मार्ग अपनाना चाहिए।

उज्जैन के श्री घंटेश्वर महादेव भक्तों को इसी भाव से शिव आराधना का अवसर देते हैं। चौरासी महादेव यात्रा में उनका दर्शन शिव की करुणा, क्षमा और साधना की परंपरा से जुड़ने का एक पड़ाव है। श्रद्धालु यहां अपने मन की व्यथा, परिवार की मंगलकामना और जीवन में शांति की प्रार्थना लेकर पहुंचते हैं। घंटा गण की कथा विश्वास दिलाती है कि सच्चे पश्चाताप और समर्पण से कृपा का द्वार खुल सकता है। महाकाल वन की पावन धरा पर घंटेश्वर महादेव की आराधना इसी विश्वास को मजबूत करती है कि भगवान शिव भक्त के भाव को स्वीकार कर उसे मार्गदर्शन और आश्रय प्रदान करते हैं।

हर हर महादेव! जय श्री घंटेश्वर महादेव!
यात्रा जारी है

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)